Swarnakarshan Bhairav Prayoga

॥ अथ स्वर्णाकर्षणभैरव प्रयोग:॥

लक्ष्मी चंचल है अत: इसके साथ पुरुष देवता की उपासना जरुरी है। इससे लक्ष्मी का निवास स्थिर होता है। वैष्णव संप्रदाय के अनुसार दधिवामन की उपासना तथा तन्त्र मन्त्र में गणेश व स्वर्णाकर्षण की उपासना करनी चाहिये।

इसकी उपासना से आय के साधन बढते है तथा लक्ष्मी स्थिर रहती है। स्वर्णाकर्षण भैरव स्वप्न में शास्त्रगुरु की तरह मार्गप्रदर्शन भी करता है ऐसा अनुभव है। द्ररिद्रता नाश एवं धन प्राप्ति हेतु व बगलामुखी साधना में स्वर्णाकर्षण भैरव का विशेष महत्व है एवं लाभप्रद साधना है।

DR.RUPNATHJI (DR.RUPAK NATH JI)

विनियोग - ॐ अस्य श्री स्वर्णाकर्षण भैरव मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषि: पंक्ति छन्द: हरिहरब्रह्मात्मक स्वर्णाकर्षण भैरवो देवता, ह्रीं बीजम्, स: शक्ति ओम् कीलकम् ममदारिद्र्यनाशार्थे, स्वर्ण राशि प्राप्त्यर्थे स्वर्णाकर्षण भैरव प्रसन्नार्थे जपे विनियोग:।

ऋष्यादिन्यास: - ब्रह्मऋषये नम: शिरसि, पंक्ति छन्द से नम: मुखे। स्वर्णाकर्षण दैवताया नम: हृदि। ह्रीं बीजाय नम: गुह्ये। स: शक्ति: नम: पादयो: ओम् कीलकाय नम: नाभौ। विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे।

कराङ्गन्यास - ओम् ऐं ह्रीं श्रीं आपदुद्धारणाय अंगुष्ठाभ्यां नम: । (हृदायाय

नमः)। ॥१॥ ओम् ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामिलबद्धाय तर्जनीभ्यां नमः । शिरसि स्वाहा। ॥२॥ ओम् लोकेश्वराय मध्यमाभ्यां नमः। (शिखायैवषट्)॥३॥ ओम् स्वर्णाकर्षण भैरवाय अनामिकाभ्यां नमः।(कवचाय हुम्)॥४॥ ओम् ममदारिद्रय विद्वेषणाय कनिष्ठकाभ्यां नमः।(नेत्रत्र याय वौषट्)॥५॥ ओम् महा भैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।(अस्त्राय फट्)॥६॥

ध्यानम्-

पीतवर्णं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं पीतवाससम् ।
अक्ष्यं स्वर्णमाणिक्यं-तडितपरित पात्रकम् ॥
अभिलषितं महाशूलं चामरं तोमरोद्वहम् ।
सर्वाभरणसम्पन्नं मुक्ताहारोपशोभितम् ॥१॥
मदोन्मत्तं सुखासीनं भक्तानाम् च वर प्रदम् ।
सततं चिन्तये ह्रवं भैरवं सर्वसिद्धिदम् ॥
पारिजात द्रमुकान्तारास्थते मणिमण्डपे ।
सिंहासनगतं ध्यायेद भैरवं स्वर्णदायकम् ॥२॥
गाङ्गेयपात्रं डमरुं त्रिशूलं वरं करैः संदधतं त्रिनेत्रं ।
देवा युतं तप्तस्वर्णवर्ण स्वर्णाकृतिं भैरवमाश्रयामि ॥३॥

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAKNATH)

जप मन्त्र- "ओम् ऐं ह्रीं श्रीं आपदुद्धारणाय ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामिलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्य विद्वेषणाय महाभैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं।"

इस मन्त्र की तीन या पांच माला का नित्यजाप, हवन, तर्पण, मार्जन आदि करने से इक्कालीस दिन में वांछित लाभ मिलता है।